647510 **BRS5HinF011B** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 5 (*CBCS*) Examination
December -2020 (NEW COURSE)
F-11 Hindi Literature & Language Correction (Foundation-11)

Time: 1:30 Hours **Marks: 42**

Instructions:

1. Figures to the right indicate marks.
2. There are five questions in the question paper.
3. Answer any three of the following questions.

प्रश्न-१ निम्नांकित प्रश्नों के सूचनानूसार उत्तर दीजिए । १४

(1) जिसकी बाहुएँ दीर्ध है – शब्द समुह के लिए शब्द दीजिए।
(2) जो पुस्तको की आलोचना या समीक्षा करता है – शब्द समुह के लिए शब्द दीजिए।
(3) साहित्य शब्द की परिभाषा दीजिए।
(4) अनुवाद शब्द की व्याख्या दीजिए।
(5) स्वधर्म और सद्‌वृत शब्द के विरुधार्थी शब्द दीजिए।
(6) पूर्ववर्ती, और निरामिष शब्द के विरुधार्थी शब्द दीजिए।
(7) देशज शब्द के दो उदाहरण दीजिए।
(8) विदेशी शब्द के दो उदाहरण दीजिए।
(9) जेम्स होवेल ने पत्र के लिये कौन – सी – परिभाषा दी है?
(10) रात और संध्या के बीच की बेला – शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए।
(11) ध्रुत गमन करने वाला – शब्दसमुह के लिए शब्द दीजिए।
(12) उन्मूलन – और अकर्मण्य शब्द का विरुद्धार्थी दीजिए।
(13) तत्सम् शब्द किसे कहते है, परिभाषा दीजिए।
(14) तद्‌भव् शब्द किसे कहते है, परिभाषा दीजिए।

प्रश्न-२ पत्र की परिभाषा देकर – अच्छे पत्र की विशेषताएँ सविस्तर लिखे। १४

प्रश्न-३ हिंदी शब्द समुह की उदाहरणों के साथ चर्चा करें। १४

प्रश्न-४ अनुवाद शब्द को परिभाषा, अर्थ और उपयोगिता के बारे में लिखे। १४

प्रश्न-५ निम्नाकिंत प्रश्नो में से किन्ही दो प्रश्नो के उत्तर दे। १४

(१) साहित्य का उद्देश्य – उदाहरण सहित बताईए।
(२) नौकरी हेतु आवेदन – पत्र का नमूना तैयार करे।
(३) निमंत्रण पत्र का नमूना तैयार करें।
(४) निम्नाकिंत परिच्छेद का गुजराती भाषा में अनुवाद करें।

संसार में मनुराय जब आता है, तब अपने साथ कुछ नहीं लाता, किंतु जब यह संसार छोड़कर जाता है, तब अपने साथ कुछ नहीं उसके साथ होते है। इन कर्मों से ही संसार में मनुराय का मूल्यांकन होता है, धन, दौलत, बाग, बगीचे, सब यही रह जाते है, केवल नाम अथवा कीर्ति ही मनुष्य के स्मरण का साधन है। भले लोगों का नाम लेकर उनके सदगुणों की संसार में प्रशंसा होती है – और बुरे लोग निंदा के पात्र – होते है। इस प्रकार अच्छा या बुरा नाम ही बाकी बचता है – संस्कृत के गृच्छ कटिक नाटक में भी कहा गया है – "कीर्तिश्य स जीवति"। जिसे कीर्ति मिलती है, वही जीवित रहता है।

****